CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Research Paper

Received on 18.08.2022
Reviewed on 20.08.2022
Accepted on 25.08.2022

बरेली जनपद के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

*नीरु
**डॉ0 प्रतिभा रस्तोगी

मूख्य शब्द– *बरेली जनवद, उच्चतर माध्यमिक स्तर, हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति आदि।*

सार–संक्षेप

भारत की भाषिक विविधता एक जाटिल चुनौती तो पेश करती ही है लेकिन वह कई प्रकार के अवसर भी देती है। भारत केवल इस मामले में ही अनूठा नही है कि यहाँ अनेक प्रकार की भाषायें बोली जाती है बल्कि उन भाषाओं में अनेक भाषा परिवारों का प्रतिनिधि भी है। परन्तु वर्तमान समय में अग्रेंजी भाषा की प्रमुखता बढती जा रही है। हिन्दी भाषा को एक गौण भाषा के रुप में देखा जाने लगा है। हिन्दी भाषा की वर्तमान आवश्यकता को ध्यान में रखतें हुये, प्रस्तुत शोध कार्य किया गया है। इसमें बरेली जनपद में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययपरत् यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। जो कि सुषमा शर्मा और सुनीता छाबरा के द्वारा निर्मित "Attitude Toward Hindi Scale" का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान व मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया । जिसके परिणाम स्वरुप प्रस्तुत शोधकार्य के निर्धारित उद्देश्यो के लिये प्रस्तावित परिकल्पनाओं में सभी परिकल्पनाएं अस्वीकृत कर ली गई । इसमें यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 सी0 के विद्यार्थियों में हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। इस प्रकार निष्कर्ष रुप में हम कह सकते है कि यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड में शैक्षिक व सामाजिक परिवेश में अन्तर को समाप्त करके विद्यार्थियो में अभिवृत्ति को बढाया जा सकता है। जो कि आगे चलकर समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियो का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्युपरान्त चलता रहता है।

शिक्षा एक महत्वपूर्ण एवं सर्वव्यापी विषय है। यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है, अतीत काल से मनुष्य ने जागरुक रहकर अपनी वाक्शक्ति का व्यक्ति के बीच समुदाय तथा समुदाय के बीच सन्तति के बीच अपने व्यवहारिक अनुभव भण्डार का संचार

करने के लिये भाषा का प्रयोग किया केवल मनुष्य को ही भाषा का वरदान ईश्वर से मिला है। इसी कारण मनुष्य को सभी जीवधारियों में सर्वोत्त्म स्थान प्राप्त है। भाषा एक मानवीय कलाकृति है, भाषा की उत्पत्ति वैज्ञानिको के लिये भी रहस्य है।

हिन्दी को भारत की राजभाषा का गौरव प्राप्त है। भारतीय संविधान की धारा 351 (ए) प्रत्येक बच्चे को मातृभाषा के माध्यम में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करती है। मातृभाषा के बाद राष्ट्रभाषा का प्रमुख स्थान है। प्रत्येक राष्ट्र की एक भाषा होती है। जिसका संविधान में उल्लेख किया जाता है। भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरवपूर्ण स्थान प्रदान किया गया परन्तु दुर्भाग्य यह है कि भारतीयो को विदेशी भाषा को अपनाने में संकोच नही है। परन्तु हिन्दी को अपनाने में आपत्ति रही है, जबकि हिन्दी में राष्ट्रभाषा के गुण समाहित है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है। जिसे अधिकांश भारत की जनता बोलती और समझती है।

हम अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को वह मान–सम्मान नही दे पा रहे है जो भारत देश के प्रत्येक देशवासी की नजर में होना चाहिए। बच्चों की हर तरह की जरुरते, पसंद–नापसंद रुचिया, आर्दश चिन्तन शैली, सोचने का तरीका, व्यक्तियों के प्रति अभिवृत्ति या दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिये सर्वप्रथम शिक्षक को हिन्दी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये। राष्ट्रीय एकता और भावात्मक एकता का विकास राष्ट्रभाषा की शिक्षा द्वारा ही सम्भव है।

सम्बन्धित शोध साहित्य

पंकज, प्रदीप कुमार (2021) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मातृभाषा के प्रति अभिरुचि व अभिवृत्ति का अध्ययन विषय पर अपना शोध कार्य किया। अपने शोध अध्ययन हेतु इन्होने राजस्थान राज्य के कोटा जिले के माध्यमिक स्तर (कक्षा 9–10) पर अध्ययरत 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में चुना और सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु अपने मध्यमान मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया। तथा पाया कि शोध से सम्बन्धित सभी परिकल्पनाएं स्वीकृत हुई। अतः यह कहा जा सकता है। कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी तथा गैर–सरकारी छात्र एवं छात्राओं की मात्भाषा के प्रति अभिवृत्ति तथा अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

बोहने, लखन लाल (2020) ने अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अर्न्तक्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया। इसमें शोध कार्य हेतु न्यादर्श के रुप में कक्षा आठ में अध्ययनरत् तीन सौ सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया। अध्ययन सम्बन्धों अधिगम शैली हेतृ डॉ0 सुषमा शर्मा एवं डॉ0 सुनीता छावरा द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया। संख्यिकीय विश्लेषण हेतु ANOVA का प्रयोग किया गया। अन्ततः अध्ययन से प्राप्त परिणामों के विश्लेषण के आधार पर पाया गया कि विद्यार्थियों की अधिगम शैली का उनकी हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के अध्ययनरत् विद्यार्थियों का हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के छात्रो की हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड की छात्राओ का हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड में अध्ययनरत् छात्रो की हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

3. यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड में अध्ययनरत् छात्रोओं की हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है।

अनुसंधान की विधि

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया क्योकि प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देश्य बरेली जनपद के उच्चतर माध्यमिक स्तर के यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

अनुसुंधान की जनसंख्या

प्रस्तुत शोधकार्य में जनसंख्या के अर्न्तगत उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद बरेली के उच्चतर माध्यमिक स्तर के यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के समस्त विद्यालयो में अध्ययपात् विद्यार्थी सम्मिलित है। अतः प्राप्त निष्कर्ष इसी जनसंख्या के लिये ही मान्य होगे।

न्यादर्श चयन एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने 'यादृच्छिक प्रतिदर्श प्रणाली' द्वारा बरेली जनपद के चार यू0 पी0 बोर्ड चार सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के विद्यालयो का चयन किया गया उन विद्यालयो के 50 यू0 पी0 बोर्ड 50 सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के विद्यार्थी चयनित किये गये जिसमें 25–25 छात्राये तथा 25–25 छात्रो को सम्मिलित किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु ऑकडो के संग्रह करने के लिये डॉ0 सुषमा शर्मा तथा सुनीता छाबरा द्वारा निर्मित "Attitude Towards Hindi Scale" का प्रयोग किया गया है। इस उपकरण में हिन्दी विषय की अभिवृत्ति से सम्बन्धित छप्पन पद (56) है। उपकरण की विश्वसनीयता गुणांक का सहसम्बन्ध 0.78 जो कि 0.1 के स्तर के महत्व को दर्शाता है।

सांख्यिकी प्रविधियां

प्रस्तुत शोधकर्ता में एकत्र आंकडो के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिये मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकडो का विश्लेषण

प्रस्तुत शोधकार्य में आंकडों का विश्लेषण हेतु प्रयोज्यो के प्राप्तांको का वर्ग अन्तराल ज्ञात करके तैयार की गई और इसके आवृत्ति विवरण सारणी आधार पर मध्यमान का मानक विचलन की गणना की गई।

तालिका–1

यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों के आंकडो की तालिका

बोर्ड	संख्या	मध्यमान	मानकविचलन	टी–परीक्षण	परीक्षण
यू0 पी0 बोर्ड	50	157.28	4.155	3.5	अस्वीकृत 0.05 सार्थकतास्तर पर
सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड	50	150.8	12.398		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है। कि मध्यमान व मानक विचलन के उपरान्त प्राप्त टी–मान 3.5 है। जो कि 0. 05 सार्थकता के मान 1.98 से अधिक है अर्थात शून्य पीरकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। इसका कारण यह हो सकता है कि जहाँ पर यू0 पी0 बोर्ड में हिन्दी भाषा में शिक्षण कार्य किया जाता है वही सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड में हिन्दी एक विषय के रुप में स्वीकृत किया गया है।

तालिका–2

यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के छात्रो के आंकडो की तालिका

बोर्ड	संख्या	मध्यमान	मानकविचलन	टी–परीक्षण	परीक्षण
यू0 पी0 बोर्ड	25	157.64	3.773	2.6	अस्वीकृत 0.05 सार्थकतास्तर पर
सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड	25	151.12	11.959		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है। कि मध्यमान व मानक विचलन तथा टी–मान 2.6 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर के मान 2.01 से अधिक है अर्थात् शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के छात्रों में हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। इसका कारण यह हो सकता है। कि यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के छात्र हिन्दी की कक्षा में समान रुप से उपस्थित व सक्रिय नही रहते तथा शिक्षण कार्य में समान तकनीकी का प्रयोग नही किया जाता है।

तालिका–3

यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के छात्राओ के आंकडो की तालिका

बोर्ड	संख्या	मध्यमान	मानकविचलन	टी–परीक्षण	परीक्षण
यू0 पी0 बोर्ड	25	156.92	4.554	2.33	अस्वीकृत 0.05 सार्थकतास्तर पर
सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड	25	150.48	13.061		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है। कि यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड की छात्राओ की हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति में प्राप्त आकडो का मध्यमान व मानक विचलन तथा टी–मान 2.33 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तर के मान 2. 01 से अधिक है अर्थात शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत होती है। इसका कारण यह हो सकता है कि यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड की छात्राओ में हिन्दी विषय को लेकर समान अभिवृत्ति विकसित नही हुई। ऐसा इसलिये हो सकता है शैक्षिक व सामाजिक वातावरण में असमानता जिसके परिणामस्वरुप छात्राओं की हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत लघु शोध से प्राप्त परिणामों से निष्कर्ष पर निकलता है कि यू0 पी0 बोर्ड तथा सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में हिन्दी विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। इसका कारण यह हो सकता है कि यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड विद्यालयों के वातावरण में अन्तर है तथा इनमें शिक्षण तकनीकी व पाठयक्रम का भी अन्तर पाया जाता है। जहाँ पर यू0 पी0 बोर्ड में हिन्दी भाषा में शिक्षण कार्य किया जाता है, वही सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड में हिन्दी एक विषय के रुप में स्वीकृत है। यू0 पी0 बोर्ड अधिकांश प्रतियोगिताओं का आयोजन हिन्दी भाषा में कराया जाता है। वही सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड में प्रतियोगिताओं का मंचन अंग्रेजी भाषा में कराया जाता है, साथ ही साथ अंग्रजी भाषा में विचार–विमर्श करने पर अधिक बल दिया जाता है। जिसके परिणामस्वरुप विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में अन्तर पाया जाता है।

अतः हिन्दी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुये छात्रों को समाजिक व व्यक्तिगत भिन्नता का ध्यान में रखते हुये इसे फलने–फूलने का सही वातावरण प्रदान किया जाये। आधुनिक युग में हम जितनी भी तकनीकी का प्रयोग कर रहे है। अधिकांश में हिन्दी भाषा में कार्य करना संविधाजनक नही है, जबकि इन तकनीकी का उपयोंग अन्य भाषाओं में सरलता से किया जा सकता है। छात्रों के इन विचारो से स्पष्ट होता है। कि दोनो ही बोर्ड (यू0 पी0 बोर्ड सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड) के विद्यार्थियो की हिन्दी भाषा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है तथा उनके इस दृष्टिकोण को बदलने के लिए विद्यार्थियों कि अभिवृत्ति को ठीक प्रकार से समझकर सकारात्मक परिवेश का निर्माण करना चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोधकार्य भावी शोधकर्त्ताओं के लिए विभिन्न विषयों में शोध करने के लिये एक आधार प्रस्तुत करेगा, जिसमें विभिन्न विषयों पर विद्यार्थियों की अभिवृत्ति की जा जाँच की जा सकेगी।

इसे शोध कार्य द्वारा शोधकर्त्ताओं को यह पता चल जायेगा कि विद्यार्थियों की हिन्दी विषय को लेकर क्या अभिवृत्ति है जो शिक्षकों के लिए एक आधार प्रदान करेगा। क्योकि वर्तमान समय में लोग हिन्दी भाषा के स्थान पर अग्रेजी भाषा को प्राथमिकता दे रहे है। प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चो को अग्रेजी भाषा में शिक्षा प्रदान कराना चाहते है, अभिभावकों को लगता है कि अग्रेजी भाषा सीखकर व्यक्ति समाज व व्यवयाय के क्षेत्र में अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। परन्तु वर्तमान समय में हिन्दी भाषा ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है इसका वर्तातान में सजीव उदाहरण प्रख्यात रचनाकार कवि कुमार विश्वास जी है, जिन्होने हिन्दी भाषा के माध्यम से भारत में ही नही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रसिद्वि प्राप्त की है। हिन्दी केवल भाषा ही नही बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अल्तेकर, एस. एस. (1958) "प्राचीन भारत में शिक्षा" वाराणसी बुक डिपो, वाराणसी।
- गुप्ता, डॉ0 एस. पी. एवं गुप्ता अल्का (2017) "शिक्षा मनोविज्ञान" शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
- सिंह डॉ0 गया, कुमार राय डॉ0 अनिल (2015) "शैक्षिक अनुसंधान की विधियॉ" आर. लाल. पब्लिकेशन, मेरठ।
- गुप्ता प्रो. एस. पी./गुप्ता डॉ0 अल्का (2015) "उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्वान्त एवं व्यवहार" शारदा पुस्तक इलाहाबाद।
- चतुर्वेदी स्नेहलता "पाठयक्रम में भाषा" अग्रवाल पब्लिकेशन।
- गोयल डॉ0 राजकुमार अग्रवाल, अग्रवाल डॉ0 मीरा "हिन्दी शिक्षण" आर. लाल. पब्लिकेशन मेरठ।
- बोहने, लखन लाल (2020) "अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अर्न्तक्रिया का कक्षा आठवीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन" मुक्त शब्द जरनल, टंस.प्ए पेनम ग्प् नवम्वर 2020 पेद.2347.3150प
- पंकज, प्रदीप कुमार (2021), "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मातृभाषा के प्रति अभिरुचि व अभिवृत्ति का अध्ययन" – Chetna-international journal of Education, Val-1, Jan-Mar 2021 issn-Print-2231-3613, online-2455-8729, www.echetana.com

Corresponding Author
**नीरु,* *छात्रा एम.एड.*
***डॉ0 प्रतिभा रस्तोगी, असिस्टेंट प्रोफेसर*
शिक्षा विभाग, ज्योति कॉलेज मैनेजमेन्ट साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी, बरेली
Email: pratibha01rastogi@gmail.com, Mob.-9149038414